

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 6: पूतना का उद्धार

14 September 2026



कंस द्वारा एक सुन्दर स्त्री के वेश में भेजी गई शिशु-घातिनी पूतना शिशु भगवान् को अपनी गोद में लेती है — और अपनी मृत्यु के बदले, साधुजनों के योग्य उद्धार पाती है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पिछले अध्याय में नन्द मथुरा से अपने मित्र वसुदेव की गोकुल के संकटों की मौन चेतावनी लेकर लौटे थे। यह षष्ठ अध्याय उन संकटों में से पहला दिखाता है, और भगवान् की अद्भुत बाल-लीलाओं में से भी पहली। शिशुओं का नाश करने कंस द्वारा भेजी गई राक्षसी पूतना एक सुन्दर स्त्री के वेश में गोकुल आती है और हृदय में हत्या का भाव लिए दिव्य शिशु को अपनी गोद में उठा लेती है। किन्तु जिस भगवान् का वध वह करना चाहती है, वही उसके विष के साथ उसके प्राण भी खींच लेते हैं — और, क्योंकि उसने दुष्ट भाव से ही सही, भगवान् को अपना स्तन दिया, उसे साधुजनों की गति प्राप्त होती है। यह अध्याय भगवान् के विरुद्ध शत्रुता की व्यर्थता और उनकी कृपा की असीम उदारता, दोनों को प्रकट करता है।

अध्याय-पारेचय

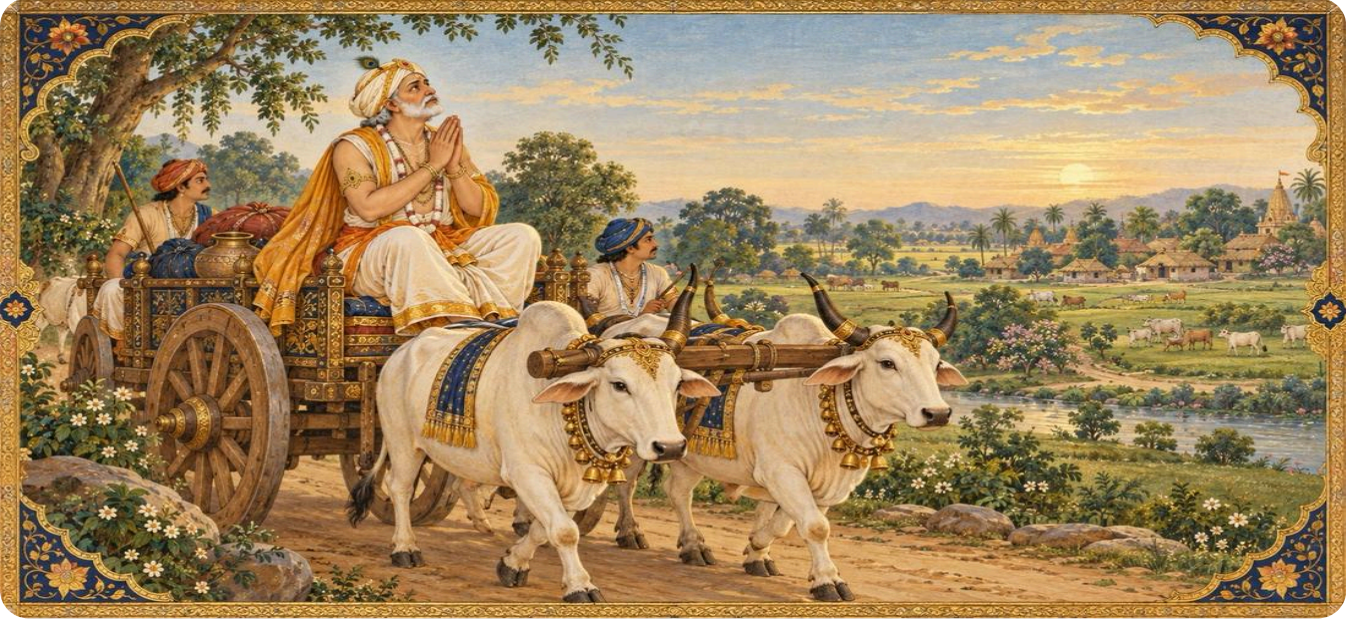
- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 6 (षष्ठ अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: पूतना का उद्धार
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित से कहते हुए); और आगे सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य के ऋषियों से कहा गया
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित (शुकदेव की कथा के भीतर); नैमिषारण्य में एकत्र ऋषिगण
- मुख्य स्थल: ब्रज में गोकुल नामक गोप-ग्राम
- केन्द्रीय विषय: राक्षसी पूतना का आगमन, भगवान् द्वारा उसका उद्धार, गोपियों द्वारा शिशु की रक्षा, तथा पूतना की साधु-गति की प्राप्ति
- मुख्य श्लोक-परिधि: स्कन्ध 10, अध्याय 6, श्लोक 1-44
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

पंचम अध्याय में गोकुल में कृष्ण-जन्म का महान् उत्सव मनाया गया, और नन्द अपना कर कंस को चुकाने मथुरा गए। वहाँ उनकी भेंट वसुदेव से हुई, जिन्होंने निकट आते संकट का आभास पाकर अपने मित्र से शीघ्र घर लौटने का आग्रह किया, क्योंकि गोकुल में विचित्र और भयावह घटनाएँ घट रही थीं। नन्द तुरन्त अन्य गोपों के साथ चल पड़े। यह अध्याय तब आरम्भ होता है जब वे उद्विग्न हृदय से लौट रहे हैं।

नन्द की आशंका तथा पूतना का आगमन

मार्ग में यह विचार करते हुए कि वसुदेव के वचन मिथ्या नहीं हो सकते, नन्द ने आने वाली विपत्तियों की आशंका से श्रीहरि की शरण ली। और सचमुच विपत्ति पहले ही फैल चुकी थी: कंस द्वारा भेजी गई भयंकर राक्षसी पूतना, जो शिशुओं का वध करने का अभ्यास रखती थी, नगरों, गाँवों तथा गोशालाओं में घूम-घूमकर जहाँ जाती, वहाँ शिशुओं का नाश करती जाती। श्रीशुकदेव यहाँ रुककर यह बताते हैं कि ऐसी अन्धकारमय शक्तियाँ आखिर प्रवेश कैसे पा जाती हैं।



घर लौटते हुए नन्द श्रीहरि की शरण लेते हैं, वसुदेव द्वारा बताई आने वाली विपत्तियों की आशंका से (श्लोक 1-3)।

न यत्र श्रवणादीनि रक्षोघ्नानि स्वकर्मसु । कुर्वन्ति सात्वतां भर्तुर्यातुधान्यश्च तत्र हि ॥ ३ ॥

na yatra śravaṇādīni rakṣo-ghnāni sva-karmasu kurvanti sātvatām bhartur yātudhānyaś ca tatra hi

अर्थ: राक्षसियाँ तथा दुष्ट आत्माएँ केवल उन्हीं स्थानों में प्रवेश पाती हैं जहाँ लोग अपने कर्तव्यों के बीच भी भगवान् — भक्तों के रक्षक — के नाम तथा महिमा के श्रवण-कीर्तन का अभ्यास नहीं करते; क्योंकि ऐसा श्रवण समस्त राक्षसों का नाश करता है। (स्कन्ध 10, अध्याय 6, श्लोक 3)

पूतना का वेश बदलकर गोकुल में प्रवेश

आकाश में विचरण करने और जहाँ चाहे जाने में समर्थ पूतना गोकुल पहुँची और, अपनी माया से, ग्राम में प्रवेश करने से पूर्व एक सुन्दर स्त्री का रूप धारण कर लिया। इस मनोहर अपरिचिता को देखकर — सुन्दर वस्त्र पहने, वेणी में चमेली गूँथे, हाथ में कमल लिए, उसकी मुस्कान और तिरछी चितवन से सबको मोहित करती हुई — गोपियों ने उसे स्वयं लक्ष्मी समझा जो अपने स्वामी के दर्शन को आई हैं। वह घरों में शिशुओं को खोजती हुई नन्द के घर पहुँची, जहाँ शिशु कृष्ण शय्या पर लेटे थे, जिनकी अपार महिमा राख में दबी अग्नि के समान ढँकी हुई थी।



अपनी माया से पूतना एक सुन्दर स्त्री के रूप में गोकुल में प्रवेश करती है, और गोपियाँ उसे अपने स्वामी के दर्शन को आई लक्ष्मी समझती हैं (श्लोक 4-9)।

उसे तुरन्त पहचानकर भगवान् ने अपने नेत्र इस प्रकार मूँद लिए मानो सो रहे हों। उसने उन्हें अपनी गोद में उसी प्रकार उठा लिया जैसे कोई अनजान मनुष्य रस्सी समझकर सोए हुए सर्प को उठा ले। दोनों माताएँ, रोहिणी और यशोदा, उस स्त्री को देखकर — जिसका व्यवहार इतना कोमल जान पड़ता था, यद्यपि उसका हृदय क्रूर था, मानो सुन्दर म्यान में छिपी तलवार हो — उसके तेज से अभिभूत होकर टकटकी लगाए खड़ी रह गई और कुछ न कर सकीं।

भगवान् द्वारा पूतना का उद्धार

शिशु को अपनी गोद में लेकर पूतना ने उन्हें अपना स्तन दिया, जिस पर उसने भयंकर विष लगा रखा था। किन्तु शिशु भगवान् ने, उसे अपने दोनों नन्हे हाथों से दृढ़ता से दबाकर, विष के साथ उसके प्राण भी खींच लिए। मुक्ति के लिए चिल्लाती हुई वह राक्षसी तड़पने और चीखने लगी, और अन्ततः अपना छद्म रूप त्यागकर अपने भयावह वास्तविक रूप में लौटकर ब्रज की सीमा पर निर्जीव होकर गिर पड़ी। इतना विशाल था वह गिरा हुआ शरीर कि उसने मीलों तक के वृक्षों को कुचल दिया — एक महान् और भयंकर आश्चर्य। गोप और गोपियाँ, जिनके हृदय उसकी अन्तिम चीख से पहले ही काँप उठे थे, उस दृश्य को देखकर भय से भर गए।

फिर भी उस सबके बीच, दिव्य शिशु उस गिरी हुई राक्षसी के शरीर पर निर्भय होकर खेलते हुए, पूर्णतः अक्षत पाए गए। गोपियाँ आतुरता से उनके पास दौड़ीं और राहत के साथ उन्हें उठा लिया।

गोपियों द्वारा शिशु की रक्षा

प्रेम और चिन्ता से अभिभूत होकर, यशोदा, रोहिणी तथा अन्य स्त्रियों ने तुरन्त शिशु के लिए रक्षा के समस्त पावन कृत्य किए। उन्होंने उसके चारों ओर गौ की पूँछ घुमाई, गंगाजल के समान पवित्र मानी जाने वाली गौ-मूत्र से उसे स्नान कराया, गौओं के खुरों से उठी धूलि से उसे सींचा, और भगवान् के बारह पावन नामों का उच्चारण करते हुए गोबर से उसके शरीर के बारह अंगों को अंकित किया।

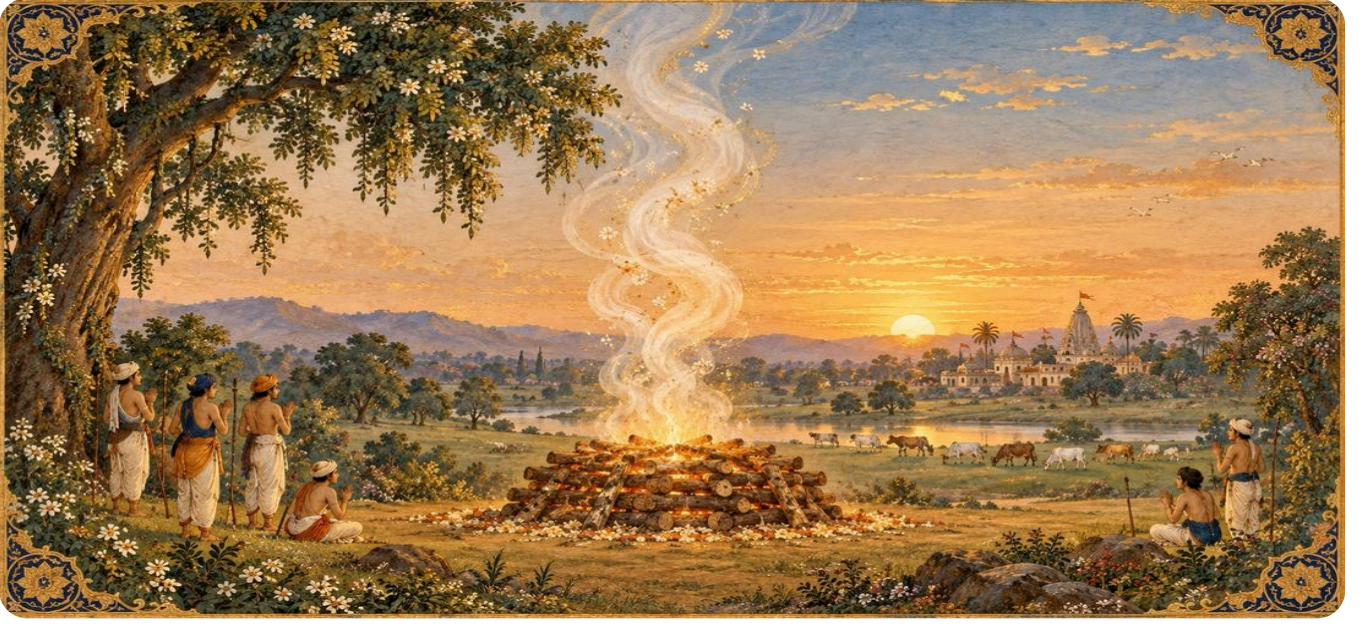


गोपियाँ शिशु को भगवान् के पावन नामों के कवच में सुरक्षित रखती हैं, समस्त पावन रक्षा-कृत्य करते हुए (श्लोक 19-29)।

फिर, जल का आचमन करके और अपने तथा शिशु के अंगों को पावन बीज-मन्त्रों से पवित्र करके, उन्होंने शिशु पर एक सुन्दर रक्षा-प्रार्थना का पाठ किया — भगवान् को उनके अनेक नामों से पुकारते हुए कि वे उसके प्रत्येक अंग तथा प्रत्येक क्रिया की रक्षा करें: खेलते समय तथा सोते समय, चलते समय तथा विश्राम करते समय उसकी रक्षा करें, और निर्दोषों को सताने वाली प्रत्येक दुष्ट आत्मा को दूर भगा दें। उनकी यह प्रार्थना दर्शाती है कि ये सरल गोपियाँ भगवान् की समर्पित सेविकाएँ थीं, जो शिशु को उन्हीं के पावन नामों के कवच में सुरक्षित रख रही थीं। आश्चर्य होकर यशोदा ने अपने पुत्र को दूध पिलाया और कोमलता से सुला दिया।

पूतना को साधुजनों की गति की प्राप्ति

इसी बीच नन्द और गोप मथुरा से आ पहुँचे और पूतना के विशाल शरीर को देखकर विस्मित हो गए। “निश्चय ही,” उन्होंने कहा, “वसुदेव कोई ऋषि बन गए हैं, अथवा किसी योग के महान् ज्ञाता हैं — क्योंकि जिस विपत्ति की उन्होंने भविष्यवाणी की थी, वह सचमुच घट गई है।” उस शरीर को काटकर और दूर ले जाकर, ग्रामवासियों ने उसे काठ की चिता पर जलाया; और उन ज्वालाओं से अगुरु-सी सुगन्धित धूम उठी, क्योंकि जिस क्षण भगवान् ने उसके प्राण खींचे, उसी क्षण उसका समस्त पाप धुल गया था। यहाँ श्रीशुकदेव इस कथा का चकित कर देने वाला मर्म प्रकट करते हैं।



जब ब्रजवासी पूतना का दाह करते हैं तब अगर-सा सुगन्धित धुआँ उठता है, क्योंकि उसका पाप धुल गया और उसे साधुजनों की गति प्राप्त हुई (श्लोक 33-38)।

पूतना लोकबालघ्नी राक्षसी रुधिराशना । जिघांसयापि हरये स्तनं दत्त्वाप सद्गतिम् ॥ ३५ ॥

pūtanā loka-bāla-ghnī rākṣasī rudhirāśanā jighāṁsayāpi haraye stanam dattvāpa sad-gatim

अर्थ: पूतना, संसार के शिशुओं का नाश करने वाली रुधिर-पान करने वाली राक्षसी, को साधुजनों की गति प्राप्त हुई — और वह भी तब जब उसने भगवान् को अपना स्तन केवल उनका वध करने की इच्छा से दिया था। (स्कन्ध 10, अध्याय 6, श्लोक 35)

श्रीशुकदेव पूछते हैं कि यदि हृदय में हत्या का भाव लेकर आने वाली को भी ऐसी कृपा मिली, तो जो अपनी प्रियतम वस्तु भगवान् को श्रद्धा और प्रेम से अर्पित करते हैं — जैसे उनकी स्नेहमयी माताओं और ब्रज की कोमल गौओं ने किया — उन्हें कितना अधिक न मिलेगा?

यातुधान्यपि सा स्वर्गमवाप जननीगतिम् । कृष्णभुक्तस्तनक्षीराः किमु गावोऽनुमातरः ॥ ३८ ॥

yātudhāny api sā svargam avāpa janānī-gatim kṛṣṇa-bhukta-stana-kṣīrāḥ kim u gāvo 'numātaraḥ

अर्थ: वह राक्षसी तक उस स्वर्गिक गति को प्राप्त हुई जो भगवान् की माताओं के लिए सुरक्षित है, क्योंकि भगवान् ने उस पर अपने चरण रखे और उसका स्तन स्वीकार किया; तो फिर वे गौएँ और माताएँ, जिनका दूध कृष्ण ने प्रेम से पिया, उनकी तो बात ही क्या? (स्कन्ध 10, अध्याय 6, श्लोक 38)

चिता से उठती मधुर सुगन्ध को सूँघकर नन्द तथा अन्य लोग ब्रज लौटे और, पूतना के आगमन तथा अन्त और शिशु की सुरक्षा का सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनकर, विस्मय से भर गए। नन्द ने अपने पुत्र को उठा लिया, जो मानो साक्षात् मृत्यु के मुख से लौटा था, और कोमल प्रेम से उसका मस्तक सूँघते हुए महान् आनन्द में डूब गए।

इस अध्याय को प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् का स्मरण ही सच्ची रक्षा है। दुष्टता केवल वहीं प्रवेश पाती है जहाँ भगवान् के नाम तथा महिमा का श्रवण नहीं होता; जहाँ उनका स्मरण पाला जाता है, वहाँ कोई अन्धकार टिक नहीं सकता (श्लोक 3)।
2. भगवान् के विरुद्ध शत्रुता शक्तिहीन है। पूतना विष और छद्म-वेश से सज्जित होकर आती है, फिर भी सोया हुआ शिशु सहज ही उसे परास्त कर देता है। भगवान् के विरुद्ध कोई षड्यन्त्र कभी सफल नहीं हो सकता (श्लोक 7-13)।
3. भगवान् छोटी-से-छोटी भेंट भी स्वीकार करते हैं — और अर्पणकर्ता को रूपान्तरित कर देते हैं। क्योंकि पूतना ने भगवान् को अपना स्तन दिया, चाहे भाव कितना भी दुष्ट रहा हो, भगवान् के स्पर्श मात्र ने उसे पवित्र कर साधु-गति तक उठा दिया। उनकी कृपा किसी भी ऐसी भेंट का उत्तर देती है जो किसी आत्मा को उनके निकट ले आए (श्लोक 35-38)।
4. भक्ति निर्दोषों का कवच है। गोपियाँ शिशु की रक्षा शस्त्रों से नहीं, अपितु भगवान् के पावन नामों से करती हैं, यह दर्शाते हुए कि सबसे निश्चित सुरक्षा स्वयं को तथा अपने प्रियजनों को भगवान् की शरण में रखना है (श्लोक 19-29)।
5. भगवान् को अर्पित प्रेम कभी व्यर्थ नहीं जाता। ब्रज की माताएँ और गौएँ, जिन्होंने कृष्ण को अपना स्नेह और अपना दूध दिया, उन्हें परम गति का आश्वासन मिलता है। जो हम भगवान् को प्रेमपूर्वक अर्पित करते हैं, वह उनकी शाश्वत कृपा बनकर हमारे पास लौट आता है (श्लोक 36-40)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस अध्याय का आश्चर्य यह नहीं कि भगवान् एक राक्षसी का वध करते हैं — आश्चर्य यह है कि वे उसका उद्धार करते हैं। पूतना गोकुल में साक्षात् मृत्यु बनकर आती है, और साधुजनों की गति की ओर बढ़ती हुई विदा होती है। वह हत्या के भाव से भगवान् को अपना विषाक्त स्तन देती है, और वे उसे, विष सहित, अपने भीतर खींच लेते हैं, अपने स्पर्श की अग्नि में उसका पाप जला देते हैं। यदि एक शत्रु के प्रति उनका ऐसा उत्तर है, तो प्रेम के प्रति उनका उत्तर कैसा होगा? यह अध्याय चुपचाप हमारे इस भाव को उलट देता है कि कौन योग्य है। यह सुझाता है कि दिव्य के साथ कोई भी सम्पर्क, कोई भी भेंट चाहे उसका भाव कितना भी अपूर्ण हो, व्यर्थ नहीं जाती — कि भगवान् सदैव स्वयं को देने का कोई कारण खोजते रहते हैं। भक्त के लिए यह अपार आशा का स्रोत है: हमारी भेंटें सदा दोषयुक्त हैं, हमारे भाव कभी शुद्ध नहीं, फिर भी भगवान् उन्हें स्वीकार करते हैं, और हमें स्वीकार करते हैं, और हमारी दुर्बल भेंटों को भी अपनी कृपा का द्वार बना देते हैं।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, अपने घर और अपने हृदय की रक्षा सबसे सरल कवच से करें: भगवान् के नाम से। जैसे गोपियों ने शिशु को भगवान् के पावन नामों के कवच में ढँका, वैसे ही कुछ क्षण निकालकर अपने दिन, अपने परिवार और अपने कार्य पर भगवान् का नाम जपें, इन सबको उनकी देखरेख में सौंप दें। उनका स्मरण वह द्वार बने जिसे कोई अन्धकार पार न कर सके। आरम्भ करते समय जपें: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।”

उपसंहार

दशम स्कन्ध का षष्ठ अध्याय हमें कृष्ण के बाल-आश्चर्यों में से पहला — और सबसे मार्मिक — देता है। वध करने भेजी गई राक्षसी पूतना इसके बदले अपना उद्धार पाती है; भगवान् के लिए बनाया गया विष उसकी शुद्धि का अवसर बन जाता है; और शिशु अक्षत रहता है, अपनी माताओं के प्रेम और पावन नामों के कवच में सुरक्षित। इस कथा के भय के नीचे एक चकित कर देने वाली करुणा की धारा बहती है: कि भगवान् उसे भी, जो उनकी हत्यारिन बनकर आई, साधु-गति प्रदान करते हैं, केवल इसलिए कि वह उनके निकट आई। श्रीशुकदेव यह वचन देकर समापन करते हैं कि जो कोई पूतना के उद्धार के इस वृत्तान्त को श्रद्धा से सुनेगा, वह गौओं के रक्षक कृष्ण के प्रति शुद्ध प्रेम को प्राप्त करेगा।

य एतत् पूतनामोक्षं कृष्णस्यार्भकमद्भुतम् । शृणुयाच्छ्रद्धया मर्त्यो गोविन्दे लभते रतिम् ॥ ४४ ॥

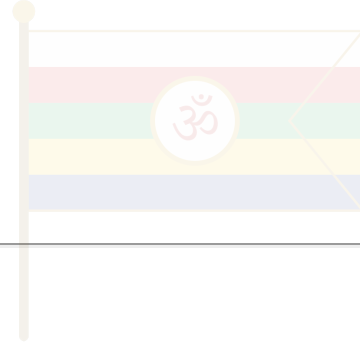
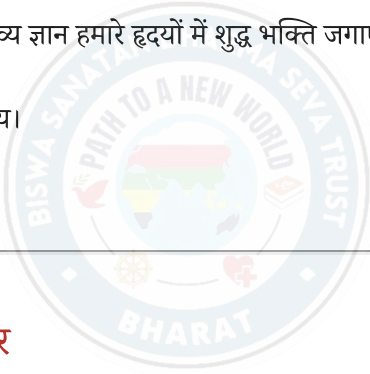
ya etat pūtanā-mokṣaṁ kṛṣṇasyārbhakam adbhutam śṛṇuyāc chraddhayā martyo govinde labhate ratim

अर्थ: जो कोई मनुष्य कृष्ण की इस अद्भुत बाल-लीला — पूतना के उद्धार — को श्रद्धा से सुनता है, वह गोविन्द के प्रति प्रेममयी भक्ति को प्राप्त करता है। (स्कन्ध 10, अध्याय 6, श्लोक 44)

श्रीमद्भागवतम् का यह दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।



सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), षष्ठ अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी और लिप्यन्तरण में दिए गए हैं तथा उनके अर्थ सारांश रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक द्वारा किसी सम्बद्धता अथवा समर्थन का कोई संकेत अभिप्रेत नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

